Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

प्राचीन शिक्षण परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति का तुलनात्मक अध्ययन

DOI: https://doi.org/10.63345/ijrhs.net.v12.i12.1

गौरव जोशी
रिसर्च स्कॉलर
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
उत्तराखंड, भारत
डॉ सारिका गोयल
अनुसंधान गाइड
महाराजा अग्रसेन हिमालयन गढ़वाल विश्वविद्यालय
उत्तराखंड, भारत

सार– भारत की प्राचीन शिक्षण परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति दो अलग-अलग युगों की शैक्षिक दृष्टियों का प्रतिनिधित्व करती हैं, किंतु दोनों का मूल उद्देश्य व्यक्ति और समाज का समग्र विकास ही रहा है। प्राचीन काल में शिक्षा का स्वरूप मुख्यतः गुरुकुल व्यवस्था पर आधारित था, जहाँ ज्ञान का संचार गुरु और शिष्य के प्रत्यक्ष संबंध के माध्यम से होता था। शिक्षा केवल बौद्धिक प्रशिक्षण तक सीमित नहीं थी, बल्कि उसमें नैतिकता, अनुशासन, आध्यात्मिकता, आत्मनिर्भरता और प्रकृति के साथ सामंजस्य जैसे मूल्यों को भी समान महत्व दिया जाता था।

इसके विपरीत, आधुनिक शिक्षा नीति–विशेषकर नई शिक्षा नीति 2020–वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी प्रगति और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विकसित की गई है। इसमें संरचनात्मक सुधार, बहुविषयक अध्ययन, डिजिटल संसाधनों का उपयोग, कौशल विकास और अनुसंधान को बढ़ावा देने जैसे तत्व प्रमुख हैं। आधुनिक नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक समावेशी, लचीला और रोजगारोन्मुख बनाना है, ताकि विद्यार्थी बदलते समय की चुनौतियों का सामना कर सकें।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो प्राचीन शिक्षा में व्यक्तिगत मार्गदर्शन, मूल्य-आधारित शिक्षण और जीवन-कौशल पर विशेष बल था, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में संस्थागत ढाँचा, मानकीकृत पाठ्यक्रम और तकनीकी एकीकरण प्रमुख हैं। प्राचीन व्यवस्था में शिक्षा सीमित वर्गों तक केंद्रित थी, जबकि आधुनिक नीति सार्वभौमिक और समान अवसर प्रदान करने की दिशा में कार्यरत है।

दोनों व्यवस्थाओं के बीच अंतर होने के बावजूद, एक महत्वपूर्ण समानता यह है कि दोनों ही शिक्षा को समाज के नैतिक और बौद्धिक उत्थान का साधन मानती हैं। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन परंपराओं के मूल्य-आधारित दृष्टिकोण और आधुनिक शिक्षा नीति की वैज्ञानिक एवं तकनीकी दृष्टि के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए। ऐसा संतुलन शिक्षा को अधिक मानवीय, व्यावहारिक और भविष्य उन्मुख बना सकता है।

प्रमुख शब्द– प्राचीन शिक्षण परंपरा, गुरुकुल व्यवस्था, मूल्य-आधारित शिक्षा, आध्यात्मिक विकास, आधुनिक शिक्षा नीति, नई शिक्षा नीति 2020, बहुविषयक अध्ययन

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी सभ्यता की बौद्धिक और सांस्कृतिक धरोहर का आधार होती है। समय के साथ समाज, अर्थव्यवस्था और

Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

ज्ञान की प्रकृति में परिवर्तन होते रहे हैं, और इन परिवर्तनों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था भी विकसित होती रही है। भारत में प्राचीन काल की शिक्षण परंपरा और वर्तमान की आधुनिक शिक्षा नीति दो अलग-अलग युगों की आवश्यकताओं और दृष्टिकोणों को प्रतिबिंबित करती हैं। इन दोनों के तुलनात्मक अध्ययन से यह समझने में सहायता मिलती है कि शिक्षा का उद्देश्य और स्वरूप किस प्रकार समय के साथ परिवर्तित हुआ है।

प्राचीन भारतीय शिक्षण परंपरा मुख्यतः गुरुकुल व्यवस्था पर आधारित थी, जहाँ शिक्षा जीवन का अभिन्न अंग मानी जाती थी। इसमें नैतिक मूल्यों, आत्मानुशासन, आध्यात्मिक चिंतन और प्रकृति के साथ संतुलन पर विशेष बल दिया जाता था। शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि व्यक्तित्व का समग्र विकास था। गुरु और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंध शिक्षा प्रक्रिया की आत्मा माने जाते थे।

वर्तमान समय में आधुनिक शिक्षा नीति, विशेषकर नई शिक्षा नीति 2020, वैश्विक परिप्रेक्ष्य, तकनीकी प्रगति और बदलती सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित की गई है। इसमें समावेशिता, बहुविषयक अध्ययन, कौशल विकास और डिजिटल साधनों के उपयोग पर जोर दिया गया है। आधुनिक नीति का उद्देश्य शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला और रोजगारोन्मुख बनाना है, ताकि विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार हो सकें।

अतः प्राचीन शिक्षण परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति का तुलनात्मक अध्ययन न केवल ऐतिहासिक और समकालीन शिक्षा के अंतर को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी दर्शाता है कि शिक्षा की मूल भावना–मानव विकास और सामाजिक उत्थान–दोनों युगों में समान रूप से महत्वपूर्ण रही है।

प्राचीन भारतीय शिक्षण परंपरा का स्वरूप

प्राचीन भारतीय शिक्षण परंपरा का स्वरूप आध्यात्मिक, नैतिक और व्यावहारिक जीवन मूल्यों पर आधारित था। शिक्षा को केवल ज्ञान प्राप्ति का माध्यम नहीं, बल्कि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व निर्माण का साधन माना जाता था। उस समय की शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः **गुरुकुल प्रणाली** पर आधारित थी, जहाँ विद्यार्थी गुरु के आश्रम में निवास कर जीवन के विभिन्न आयामों का अनुभवात्मक ज्ञान प्राप्त करते थे।

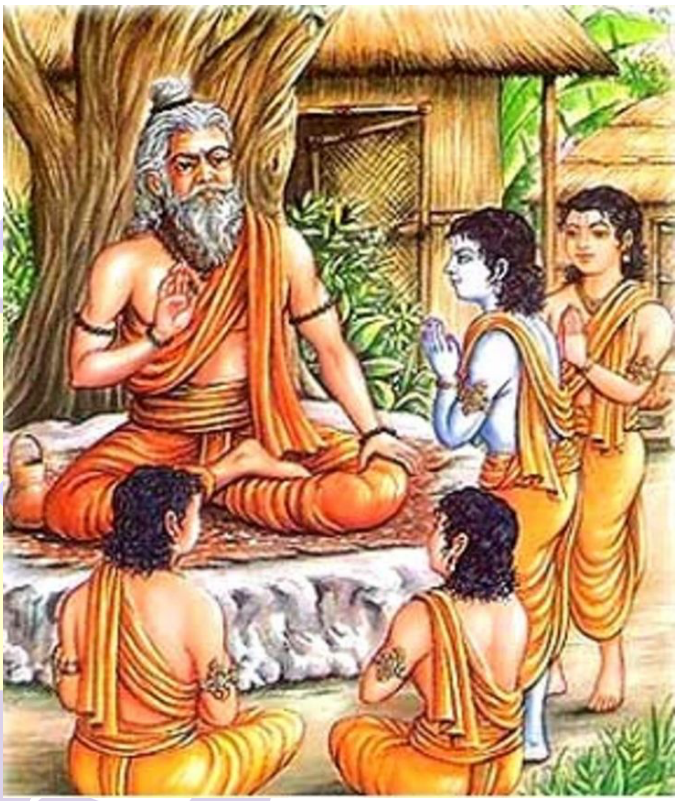

1. गुरुकुल व्यवस्था

गुरुकुल में शिक्षा आवासीय और आत्मीय वातावरण में दी जाती थी। गुरु और शिष्य के बीच घनिष्ठ संबंध होते थे, जो केवल शैक्षणिक नहीं बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन से भी जुड़े होते थे। विद्यार्थी आत्मानुशासन, सेवा भावना और सादगीपूर्ण जीवन का अभ्यास करते थे। शिक्षा का केंद्र बिंदु केवल पाठ्य ज्ञान नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और आत्मविकास था।

2. समग्र विकास की अवधारणा

प्राचीन शिक्षा में बौद्धिक, शारीरिक और आध्यात्मिक विकास को समान महत्व दिया जाता था। वेद, उपनिषद, व्याकरण, गणित, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, दर्शन, राजनीति और युद्धकला जैसे विषयों का अध्ययन किया जाता था। शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति को समाजोपयोगी, नैतिक और कर्तव्यनिष्ठ बनाना था।

Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

3. मूल्य-आधारित शिक्षण

नैतिकता, सत्य, अहिंसा, कर्तव्यबोध और अनुशासन जैसे मूल्यों को शिक्षा का आधार माना जाता था। विद्यार्थी जीवन में संयम और आत्मनियंत्रण का अभ्यास करते थे। गुरु के मार्गदर्शन में जीवन की समस्याओं को समझने और उनका समाधान खोजने की क्षमता विकसित की जाती थी।

4. मौखिक परंपरा और स्मरण शक्ति

उस समय लिखित सामग्री सीमित थी, इसलिए ज्ञान का संचार मुख्यतः मौखिक रूप से होता था। श्लोकों और मंत्रों का उच्चारण, पुनरावृत्ति और कंठस्थ करना शिक्षा का प्रमुख माध्यम था। इससे स्मरण शक्ति और ध्यान क्षमता का विकास होता था।

5. उच्च शिक्षा केंद्र

तक्षशिला और नालंदा जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय ज्ञान के प्रमुख केंद्र थे, जहाँ देश-विदेश से विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे। ये संस्थान विविध विषयों के अध्ययन और शोध के लिए प्रसिद्ध थे।

आधुनिक शिक्षा नीति का स्वरूप (विशेष संदर्भ: नई शिक्षा नीति 2020)

आधुनिक शिक्षा नीति का स्वरूप वर्तमान सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए निर्मित किया गया है। विशेष रूप से नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षा को अधिक लचीला, समावेशी, बहुविषयक और कौशल-आधारित बनाने की दिशा में एक व्यापक दृष्टि प्रस्तुत करती है। इसका उद्देश्य केवल परीक्षा-केन्द्रित प्रणाली से आगे बढ़कर ऐसी शिक्षा प्रदान करना है जो विद्यार्थियों में रचनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन और समस्या-समाधान क्षमता विकसित करे।

1. संरचनात्मक पुनर्गठन

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत विद्यालयी शिक्षा को 5+3+3+4 ढांचे में पुनर्गठित किया गया है, जिससे प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में समाहित किया गया है। यह ढांचा बच्चों के संज्ञानात्मक और भावनात्मक विकास को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है।

2. बहुविषयक और लचीला पाठ्यक्रम

नीति का एक प्रमुख पहलू विषय चयन में लचीलापन है। विज्ञान, कला और वाणिज्य के पारंपरिक विभाजन को कम करते हुए विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का संयोजन चुनने की स्वतंत्रता दी गई है। इससे अंतःविषय समझ और नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है।

3. मातृभाषा और बहुभाषिकता

प्रारंभिक कक्षाओं में मातृभाषा या स्थानीय भाषा में शिक्षण पर बल दिया गया है। इसका उद्देश्य बच्चों की समझ को सुदृढ़ करना और सीखने की प्रक्रिया को अधिक सहज बनाना है। साथ ही, बहुभाषिकता को भी बढ़ावा दिया गया है।

4. कौशल और व्यावसायिक शिक्षा

कक्षा 6 से व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप को शामिल कर शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाने का प्रयास किया गया है। इससे विद्यार्थी व्यावहारिक अनुभव प्राप्त कर भविष्य के लिए तैयार हो सकते हैं।

5. डिजिटल और तकनीकी एकीकरण

आधुनिक नीति में प्रौद्योगिकी के उपयोग को विशेष महत्व दिया गया है। ऑनलाइन शिक्षा, वर्चुअल लैब, डिजिटल प्लेटफॉर्म और मिश्रित शिक्षण मॉडल को बढ़ावा देकर शिक्षा की पहुँच और गुणवत्ता को सुदृढ़ करने का लक्ष्य रखा गया है।

6. मूल्यांकन और अनुसंधान पर बल

परीक्षा प्रणाली में सुधार कर निरंतर और समग्र मूल्यांकन को प्रोत्साहित किया गया है। उच्च शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए संस्थागत ढांचे को सुदृढ़ करने की योजना बनाई गई है।

Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

समग्र रूप से, नई शिक्षा नीति 2020 आधुनिक शिक्षा को वैश्विक मानकों के अनुरूप, समावेशी और भविष्य-उन्मुख बनाने का प्रयास करती है। यह नीति ज्ञान, कौशल और नैतिक मूल्यों के संतुलन के माध्यम से विद्यार्थियों के समग्र विकास की दिशा में मार्ग प्रशस्त करती है।

शिक्षण पद्धति में परिवर्तन

शिक्षा के क्षेत्र में समय के साथ शिक्षण पद्धति में व्यापक परिवर्तन देखने को मिले हैं। प्राचीन काल में शिक्षण प्रक्रिया मुख्यतः मौखिक संवाद, स्मरण और अनुकरण पर आधारित थी, जहाँ गुरु ज्ञान का प्रत्यक्ष संप्रेषण करते थे और शिष्य उसे आत्मसात करते थे। वर्तमान समय में शिक्षण पद्धति अधिक छात्र-केन्द्रित, सहभागितापूर्ण और प्रौद्योगिकी-समर्थ बन गई है। यह परिवर्तन सामाजिक आवश्यकताओं, वैज्ञानिक प्रगति और मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों के प्रभाव से विकसित हुआ है।

1. शिक्षक-केन्द्रित से विद्यार्थी-केन्द्रित दृष्टिकोण

पूर्व में शिक्षण का केंद्र गुरु या शिक्षक होता था। आज शिक्षण प्रक्रिया में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी को प्राथमिकता दी जाती है। चर्चा, समूह कार्य, परियोजना-आधारित अध्ययन और अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से विद्यार्थियों को स्वयं खोजने और समझने के अवसर दिए जाते हैं।

2. रटने से समझ आधारित अधिगम

पारंपरिक व्यवस्था में स्मरण शक्ति पर विशेष बल था। आधुनिक पद्धति में अवधारणात्मक समझ, विश्लेषणात्मक सोच और समस्या-समाधान क्षमता को अधिक महत्व दिया जाता है। इससे विद्यार्थियों में आलोचनात्मक चिंतन विकसित होता है।

3. प्रौद्योगिकी का समावेश

डिजिटल उपकरण, स्मार्ट बोर्ड, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, वर्चुअल प्रयोगशालाएँ और मल्टीमीडिया संसाधनों ने शिक्षण को अधिक आकर्षक और प्रभावी बनाया है। मिश्रित (ब्लेंडेड) शिक्षण मॉडल के माध्यम से कक्षा और ऑनलाइन शिक्षा का संयोजन संभव हुआ है।

4. निरंतर और समग्र मूल्यांकन

केवल वार्षिक परीक्षा पर निर्भर रहने के स्थान पर अब निरंतर मूल्यांकन प्रणाली अपनाई जा रही है। परियोजनाएँ, प्रस्तुतियाँ, गतिविधियाँ और व्यवहारिक आकलन शिक्षण प्रक्रिया का हिस्सा बन गए हैं।

5. कौशल और जीवनोपयोगी शिक्षा

आधुनिक शिक्षण पद्धति में संचार कौशल, रचनात्मकता, सहयोग और नैतिक मूल्यों को भी महत्व दिया जाता है। शिक्षा को केवल अकादमिक उपलब्धि तक सीमित न रखकर जीवन कौशल से जोड़ा जा रहा है।

प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक विश्लेषण

प्राचीन और आधुनिक शिक्षा प्रणाली दो भिन्न ऐतिहासिक संदर्भों में विकसित हुई व्यवस्थाएँ हैं, जिनकी संरचना, उद्देश्य और कार्यप्रणाली अलग-अलग रही है। फिर भी दोनों का मूल लक्ष्य मानव विकास और समाज के उत्थान से जुड़ा रहा है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि शिक्षा का स्वरूप समय की आवश्यकताओं के अनुसार परिवर्तित होता रहा है।

1. उद्देश्य और दर्शन

प्राचीन शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के नैतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक विकास को संतुलित रूप से विकसित करना था। चरित्र निर्माण, आत्मसंयम और सामाजिक कर्तव्यों पर विशेष बल

Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

दिया जाता था।
आधुनिक शिक्षा प्रणाली का लक्ष्य ज्ञान, कौशल और तकनीकी दक्षता के माध्यम से व्यक्तियों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना है। इसमें रोजगार, अनुसंधान और नवाचार पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाता है।

2. शिक्षण पद्धति

प्राचीन व्यवस्था में गुरु-शिष्य संबंध प्रत्यक्ष और आत्मीय था। शिक्षा मुख्यतः मौखिक परंपरा और संवाद पर आधारित थी। आधुनिक प्रणाली में कक्षा शिक्षण, डिजिटल संसाधन, परियोजना-आधारित अधिगम और तकनीकी साधनों का उपयोग प्रमुख है। यहाँ विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी को महत्व दिया जाता है।

3. पाठ्यक्रम और विषय-विविधता

प्राचीन शिक्षा में वेद, दर्शन, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र और युद्धकला जैसे विषय पढ़ाए जाते थे, जिनका उद्देश्य जीवनोपयोगी ज्ञान प्रदान करना था। आधुनिक शिक्षा में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, प्रबंधन, सामाजिक विज्ञान, कला और व्यावसायिक विषयों का व्यापक विस्तार है। विषय चयन में लचीलापन और बहुविषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा दिया गया है।

4. पहुँच और समावेशिता

प्राचीन काल में शिक्षा सीमित वर्गों तक केंद्रित थी और सभी को समान अवसर उपलब्ध नहीं थे। आधुनिक शिक्षा प्रणाली सार्वभौमिक शिक्षा और समान अवसर के सिद्धांत पर आधारित है, जहाँ सभी वर्गों और लिंगों को शिक्षा का अधिकार प्राप्त है।

5. मूल्यांकन प्रणाली

प्राचीन शिक्षा में औपचारिक परीक्षा प्रणाली कम थी; मूल्यांकन गुरु के निरंतर अवलोकन और व्यवहार के आधार पर होता था। आधुनिक शिक्षा में लिखित परीक्षाएँ, आंतरिक मूल्यांकन, परियोजनाएँ और सतत आकलन प्रणाली शामिल हैं।

संक्षिप्त तुलना तालिका

पहलू	प्राचीन शिक्षा प्रणाली	आधुनिक शिक्षा प्रणाली
उद्देश्य	चरित्र और आध्यात्मिक विकास	कौशल, ज्ञान और रोजगार
पद्धति	गुरु-शिष्य संवाद, मौखिक परंपरा	कक्षा शिक्षण, डिजिटल संसाधन
पाठ्यक्रम	धार्मिक और जीवनोपयोगी विषय	विज्ञान, तकनीक, बहुविषयक अध्ययन
पहुँच	सीमित वर्ग तक	सार्वभौमिक और समावेशी
मूल्यांकन	निरंतर अवलोकन आधारित	परीक्षा और सतत मूल्यांकन

तुलनात्मक विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली मूल्य-आधारित और जीवन-केंद्रित थी, जबकि आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीक-सक्षम और वैश्विक दृष्टिकोण से प्रेरित है। दोनों की विशेषताओं का संतुलित समन्वय शिक्षा को अधिक प्रभावी और मानवीय बना सकता है।

आधुनिक शिक्षा में प्राचीन परंपराओं की प्रासंगिकता

आधुनिक शिक्षा प्रणाली तकनीकी प्रगति, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित हुई है। फिर भी, प्राचीन भारतीय शिक्षण परंपराओं में निहित मूल्य, दर्शन और जीवन दृष्टि आज भी अत्यंत प्रासंगिक हैं। यदि इन परंपराओं के सार तत्वों को आधुनिक ढांचे में

Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

समाहित किया जाए, तो शिक्षा अधिक संतुलित, मानवीय और प्रभावी बन सकती है।

1. मूल्य-आधारित शिक्षा की आवश्यकता

प्राचीन शिक्षण परंपरा में सत्य, अनुशासन, कर्तव्यबोध और नैतिकता को शिक्षा का मूल आधार माना जाता था। आज के प्रतिस्पर्धात्मक और तकनीक-केंद्रित परिवेश में भी विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करना आवश्यक है। मूल्य-आधारित शिक्षा आधुनिक समाज में नैतिक संतुलन स्थापित करने में सहायक हो सकती है।

2. समग्र विकास की अवधारणा

प्राचीन व्यवस्था में शिक्षा बौद्धिक विकास के साथ-साथ शारीरिक और आध्यात्मिक संतुलन पर भी बल देती थी। योग, ध्यान और आत्मअनुशासन जैसी प्रक्रियाएँ व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करती थीं। वर्तमान समय में बढ़ते तनाव और मानसिक दबाव के बीच इन परंपराओं की उपयोगिता और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

3. गुरु-शिष्य संबंध का महत्व

प्राचीन काल में शिक्षक केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि मार्गदर्शक और प्रेरक भी होते थे। आधुनिक शिक्षा में भी शिक्षक-विद्यार्थी के बीच विश्वास और संवाद का संबंध सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। व्यक्तिगत मार्गदर्शन और मेंटरशिप की अवधारणा उसी परंपरा का आधुनिक रूप है।

4. जीवनोपयोगी ज्ञान

प्राचीन शिक्षा में आत्मनिर्भरता, प्रकृति के प्रति सम्मान और सामाजिक सहयोग जैसे तत्व शामिल थे। आज के समय में सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और सामाजिक सामंजस्य जैसे विषयों को शिक्षा में समाहित करना उसी दृष्टिकोण का विस्तार है।

5. आत्मानुशासन और आंतरिक प्रेरणा

प्राचीन शिक्षण प्रणाली में आत्मसंयम और आंतरिक प्रेरणा को विशेष महत्व दिया जाता था। आधुनिक शिक्षा में भी यदि विद्यार्थियों को आत्मप्रेरित और जिम्मेदार बनाया जाए, तो वे केवल परीक्षा-केन्द्रित सफलता तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि जीवन के व्यापक उद्देश्यों को समझ पाएंगे।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली और प्राचीन परंपराएँ विरोधी नहीं, बल्कि परस्पर पूरक हैं। प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ यदि नैतिकता, समग्र विकास और मानवीय मूल्यों का समन्वय किया जाए, तो शिक्षा अधिक प्रभावशाली और संतुलित बन सकती है। इस प्रकार, प्राचीन शिक्षण परंपराओं की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है और उन्हें आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित कर अपनाया जाना आवश्यक है।

निष्कर्ष

प्राचीन शिक्षण परंपरा और आधुनिक शिक्षा नीति का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि यद्यपि दोनों की संरचना, पद्धति और संदर्भ भिन्न हैं, फिर भी उनका मूल उद्देश्य मानव जीवन को उन्नत बनाना ही है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली नैतिक मूल्यों, आत्मानुशासन, आध्यात्मिक संतुलन और गुरु-शिष्य संबंध की आत्मीयता पर आधारित थी, जबकि आधुनिक शिक्षा नीति वैज्ञानिक दृष्टिकोण, तकनीकी एकीकरण, बहुविषयक अध्ययन और कौशल विकास को प्राथमिकता देती है।

वर्तमान समय की चुनौतियाँ–जैसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा, डिजिटल परिवर्तन और सामाजिक विविधता–आधुनिक शिक्षा को अधिक लचीला और समावेशी बनाती हैं। साथ ही, मानसिक तनाव, नैतिक द्वंद्व और सामाजिक असंतुलन जैसी समस्याएँ यह संकेत देती हैं कि शिक्षा में मानवीय मूल्यों और चरित्र निर्माण की भूमिका भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यही वह क्षेत्र है जहाँ प्राचीन परंपराओं की सार्थकता आज भी बनी हुई है।

तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाए तो आधुनिक शिक्षा प्रणाली व्यापक पहुँच और अवसर प्रदान करती है, जबकि प्राचीन प्रणाली जीवन-केंद्रित और मूल्य-प्रधान दृष्टिकोण को प्रोत्साहित करती थी। यदि इन दोनों के श्रेष्ठ तत्वों का समन्वय किया जाए– अर्थात तकनीकी दक्षता के साथ नैतिकता और समग्र विकास–

Vol. 12, Issue 12, December 2024
ISSN(P) 2347-5404 ISSN(O)2320 771X

तो शिक्षा अधिक संतुलित, प्रभावी और समाजोपयोगी बन सकती है।

अंततः, शिक्षा का लक्ष्य केवल ज्ञानार्जन या रोजगार प्राप्ति नहीं, बल्कि ऐसे जागरूक, संवेदनशील और उत्तरदायी नागरिकों का निर्माण है जो व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों स्तरों पर सकारात्मक परिवर्तन ला सकें। इसी संतुलित दृष्टिकोण में प्राचीन और आधुनिक शिक्षा की वास्तविक संगति निहित है।

संदर्भ

- Government of India, Ministry of Education. (2020). *National Education Policy 2020.* https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf
- भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय. (2020). *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/nep/NEP_Final_Hindi_0.pdf
- PRS Legislative Research. (2020). *National Education Policy 2020 - Key Highlights.* https://prsindia.org/policy/report-summaries/national-education-policy-2020
- Altekar, A. S. (1944). *Education in Ancient India.* Banaras Hindu University Press.
- Mookerji, R. (1951). *Ancient Indian Education: Brahmanical and Buddhist.* Motilal Banarsidass Publishers.
- Tilak, J. B. G. (2019). *Education and Development in India.* Springer.
- UNESCO. (2021). *Reimagining Our Futures Together: A New Social Contract for Education.* https://unesdoc.unesco.org/ark:/48223/pf0000379707

ISSN: 2347-5404
IRHS
ESTD.2013